भाषा विज्ञान की उपयोगिता

भाषा विज्ञान एक विज्ञान है। विज्ञान स्वतः निरपेक्ष होता है। तात्त्विक विवेचन और तत्त्वदर्शन ही उसका लक्ष्य होता है। तत्त्वसंदर्शन से बौद्धिक शांति और आनन्दानुभूति होती है। अतएव वैज्ञानिक चिंतन निरपेक्ष होते हुए भी सापेक्ष होता है। इसी दृष्टि से भाषा-विज्ञान की भी कतिपय उपयोगिताएँ दृष्टिगोचर होती हैं। उनका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है-

१. ज्ञान-पिपासा की शांति - भाषा विज्ञान हमारी भाषा-विषयक जिज्ञासाओं को शान्त करता है। ज्ञान की वृद्धि मानवमात्र का कर्तव्य है। भाषा हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग है। उसके विषय में विस्तृत जानकारी प्रत्येक मानव के लिए अनिवार्य है। अतएव आचार्य पतंजलि न षडंग वेद के अध्ययन की अनिवार्यता पर बल देते हुए कहा है कि ब्राह्मण को निष्काम-भाव से षडंग वेद का अध्ययन करना चाहिए।

'ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मः षडङ्गो वेदोऽध्येयोज्ञेयश्च।'

यह ज्ञान-पीपासा की शांति हमें बौद्धिक और मानसिक शांति प्रदान करती है।

२. भाषा के परिष्कृत रूप का ज्ञान – भाषा-विज्ञान के द्वारा भाषा का सूक्ष्मतम अध्ययन किया जाता है। भाषा-विज्ञान के द्वारा ध्वनियों, वर्णों, प्रकृति, प्रत्यय और अर्थ का वास्तविक ज्ञान प्राप्त होता है। जिससे शुद्ध अर्थ का बोध होता है, उच्चारण की शुद्धता आती है और भाषा के परिष्कृत रूप के साथ वाग्ब्रह्म साक्षात्कार होता है। एक प्राचीन श्रुति का यह कथन सत्य है कि-

'एकः शब्दः सम्यग् ज्ञातः सुप्रयुक्तः स्वर्गे लोके कामधुग् भवति।'

३. भाषा विज्ञान से वैज्ञानिक अध्ययन की ओर प्रवृत्ति - भाषा विज्ञान के द्वारा भाषा के सूक्ष्म अध्ययन की ओर मानव की प्रवृत्ति ही नहीं होती, अपितु उसका दृष्टिकोण विज्ञानमूलक हो जाता है। वह प्रत्येक वस्तु के तत्त्वदर्शन और तत्त्वज्ञान की ओर अग्रसर

होता है। किसी भी विज्ञान या शास्त्र का तत्त्वदर्शन और तत्त्वज्ञान की ओर अग्रसर होता है। किसी भी विज्ञान या शास्त्र का तत्त्वदर्शन मानव का लक्ष्य है।

४. वेदार्थ-ज्ञान में सहायक – वेदों के वास्तविक अर्थ के ज्ञान में भाषा-विज्ञान और तुलनात्मक अध्ययन ने विशेष योगदान किया है। लैटिन, ग्रीक, अवेस्ता, आदि भाषाओं के अध्ययन ने अनेक वैदिक शब्दों का अर्थ स्पष्ट किया है।

५. प्राचीन संस्कृति और सभ्यता का ज्ञान - प्राचीन काल की संस्कृति और सभ्यता के ज्ञान में भाषा-विज्ञान का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। भाषाशास्त्री के लिए भाषा के प्रत्येक शब्द बोलते हुए प्राणी हैं और वे अपना परिचय स्वयं देते हैं। इन शब्दों के सूक्ष्म अध्ययन से उस समय की संस्कृति और सभ्यता का ज्ञान होता है। प्रागैतिहासिक काल की संस्कृति के ज्ञान का साधन एकमात्र भाषा-विज्ञान है। आर्य जाति, द्रविड़ जाति, प्राचीन मिश्र और असीरिया की जातियों की संस्कृति का बोध भाषा-विज्ञान के द्वारा ही हुआ है।

६. विविध भाषा-ज्ञान – भाषा-विज्ञान की सहायता से अनेक भाषाओं का ज्ञान सरलता से प्राप्त किया जा सकता है। इस विषय में स्वनिम-विज्ञान हमारा विशेष सहायक होता है।

७. विश्व-बन्धुत्व-भावना का प्रेरक – भाषा-विज्ञान विश्व की प्रमुख भाषाओं का ज्ञान कराकर हमारे अंदर व्याप्त संकीर्ण भावना को दूर करता है। अनेक भाषाओं के साथ सम्बन्ध का ज्ञान होते ही उनसे आत्मीयता की अनुभूति होती है। जैसे, यह ज्ञात होते ही कि संस्कृत उसी परिवार की भाषा है, जिस परिवार के अंग लैटिन, ग्रीक, अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच, रूसी, अवेस्ता, फारसी आदि भाषाएं हैं, हमारी आत्मीयता इन भाषाओं के साथ हो जाती है और हम इन्हें अपने परिवार का अंग समझने समझने लगते हैं। इस प्रकार यह विश्वबन्धुत्व की भावना फैलाती जाती है।

८. साहित्य-ज्ञान का सहायक – भाषा-विज्ञान भाषा के सूक्ष्म अर्थों का विश्लेषण करता है। इसका अर्थ-विज्ञान अंग अर्थ-विकास की कहानी प्रस्तुत करता है। इससे न केवल

शब्दों का अर्थ ज्ञात होता है, अपितु उनमें छिपी हुई काव्य की आत्मा 'ध्वनि' भी प्रस्फुटित होती है।

९. व्याकरण दर्शन – भाषा-विज्ञान व्याकरण का व्याकरण है। व्याकरण के नियमों का क्या दार्शनिक आधार है, इसका निरूपण भाषा-विज्ञान करता है। शब्द और अर्थ का संबंध, प्रकृति और प्रत्यय का मौलिक, पद-विभाजन का आधार आदि बातों का विवेचन दार्शनिक दृष्टि से भाषा-विज्ञान करता है।

१०. वाक्-चिकित्सा – चिकित्सा-शास्त्र की दृष्टि से भाषा-विज्ञान एक आवश्यक अंग माना जाता है। तुतलाना, हकलाना, अशुद्ध उच्चारण, अशुद्ध या अस्पष्ट श्रवण आदि दोषों को दूर करने के लिए पाश्चात्य जगत् में वाक्-चिकित्सा को विशेष महत्त्व दिया जा रहा है। भाषाविज्ञान यह बताने में समर्थ होता है कि किस दोष के कारण अमुक व्यक्ति स्पष्ट बोलने में असमर्थ है तथा किस उपचार से उस रोग का उपशम हो सकता है।

११. संचार-साधनों का उपयोगी सहायक – दूर-संचार तथा यांत्रिक प्रतीकात्मक अनुवाद के लिए भाषा-विज्ञान की सहायता ली जाती है। भाषा-विज्ञान के संकेतों के द्वारा दूर-संचार-पद्धति के लिए आवश्यक संकेत उपलब्ध होते हैं।

१२. भाषिक यंत्रीकरण में सहायक - भाषा विज्ञान भाषा-विषयक यंत्रों के निर्माण में विशेष सहयोगी है। टाइपराइटर, टेलीप्रिंटर, आडियोविजुअल आदि के विकास में विशेष सहयोगी है। भाषा-विज्ञान इनके लिए शुद्ध एवं उपयोगी संकेत चिन्ह प्रदान करता है।

१३. लिपि-विकास में सहायक – भाषा-विज्ञान सांकेतिक लिपि के उन्नयन के द्वारा लिपियों में संशोधन, परिवर्तन और परिवर्धन करने में सहायक होता है।

१४. विभिन्न शास्त्रों में समन्वय – भाषा-विज्ञान का ज्ञान और विज्ञान की अनेक शाखाओं से निकटतम संपर्क है। अतः भाषा-विज्ञान का विद्यार्थी व्याकरण, साहित्य, मनोविज्ञान, शरीर-विज्ञान, भूगोल, इतिहास, भौतिक-विज्ञान आदि विषयों में सामान्यतया स्वतः परिचित हो जाता है।

१५. अनुवाद, पाठ-संशोधन, अर्थ-निर्णय आदि में सहायक - विभिन्न भाषाओं के ग्रन्थों आदि का अन्य भाषाओं में अनुवाद करने में, प्राचीन ग्रन्थों के पाठ-निर्णय में तथा प्राचीन शब्दों के अर्थ-निर्णय में भाषा-विज्ञान विशेष सहायक सिद्ध होता है।

१६. विभिन्न विज्ञानों का जन्मदाता – भाषा-विज्ञान के द्वारा ही कई नवीन विज्ञानों की उत्पत्ति हुई है। भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर तुलनात्मक भाषा-विज्ञान का जन्म हुआ है। इसी प्रकार तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर तुलनात्मक देव-विज्ञान, पुरण-विज्ञान, विश्वसंस्कृति-विज्ञान, नृजाति-विज्ञान आदि विज्ञानों का उद्भव हुआ है। ये विज्ञान तुलनात्मक पद्धति पर आश्रित हैं।

उपर्युक्त विवेचन भाषा-विज्ञान की उपयोगिता का अनुमान लगाया जा सकता है।